राष्ट्रीय सहारा 10-07-2016

एनएसआई में हुआ चीनी उद्योग के भविष्य पर मंथन

चीनी मिलों का जैव रिफाइनरीज में बदलाव समय की मांग

कल्याणपुर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में नेशनल सेमिनार में पुस्तक का विमोचन करते मैलकान टाफर, माइकल सास्का निदेशक प्रो नरेन्द्र मोहन व अन्य।

- राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में हुआ अंतरराष्ट्रीय सेमिनार
- बायो प्रोडक्ट्स आधारित विविध उत्पादों से सुधरेगी आर्थिक सेहत

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) में शनिवार को आयोजित अंतराष्ट्रीय सेमिनार में चीनी उद्योग के भविष्य के विभिन्न आयामों पर मंथन किया गया। 'चीनी क्षेत्र में जैव अर्थव्यवस्था में उभरते अवसर एवं चुनौतियां' विषय को केन्द्रित कर आयोजित किये गये सेमिनार के मौके पर चीनी विशेषज्ञों ने चीनी मिलों को जैव रिफाइनरीज में बदलाव को ही समय की मांग बताया। कहा गया कि चीनी मिलों को चीनी उत्पादन के साथ विद्युत, इथेनाल, बायो-वाटर, हरित रसायन, जैव रसायन व अन्य मूल्यवर्द्धित खाद्य उत्पादों के निर्माण की दिशा में कदम उठाना होगा। सेमिनार का आयोजन एनएसआई व मेसर्स ग्लोबल केन शुगर प्रा.लि.द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

संस्थान के निदेशक डॉ.नरेन्द्र मोहन ने सेमिनार की थीम का जिक्र करते हुए चीनी मिलों की बेहतरी व आर्थिक हालात में सुधार के लिए बाई प्रोडक्ट के उपयोग को बढ़ावा देने को समय की जरूरत बताया। सेमिनार में आये शुगर नॉलेज इंटरनेशनल लि.(लंदन) के मैलकाम टाफर ने रिफाइंड शुगर उत्पादन तकनीक, लुसियाना विवि के आडोबान शुगर इंस्टीट्यूट के रिटायर प्रोफेसर माइकल सास्का ने गन्ने के भंडारण के दौरान होने वाले सुक्रोज में कमी व गन्ने के रस की गुणवत्ता व रंग परिवर्तन, इंटरनेशनल शुगर जर्नल (यूके) के एडिटर अरविंद चुदास्मा ने जैव ईंधन रसायन व आस्ट्रेलिया से आये रिसर्च फेलो डॉ.जान झांग ने बाई प्रोडक्ट द्वारा जैव ईंधन उत्पाद सेलूलोज व इथेनाल के उत्पादन के बारे में बताया। सेमिनार समापन पर धन्यवाद ज्ञापन डॉ.सीमा परौहा ने किया।

एनर्जी केन का अल्कोहल उद्योग में हो सकता है उपयोग

सेमिनार में आये शुगर केन ब्रीडिंग संस्थान कोयंबटूर (तमिलनाडु) के निदेशक डॉ.बक्शी राम ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद व शुगर केन ब्रीडिंग संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से चलाये जा रहे एनर्जी केन ब्रीडिंग प्रोग्राम की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि चीनी बनाने के स्थान पर एनर्जी केन रस का अल्कोहल उद्योग में सीधे फर्मेंटेशन करने के लिए उपयोग में लाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि साधारण गन्ने की आपूर्ति न होने पर एनर्जी केन का उपयोग सीधे ब्वायलर को जलाने हेतु किया जा सकता है।

4-बी मॉडल अपनायें चीनी मिलें

मेसर्स ग्लोबल केन शुगर प्रा.लि.के निदेशक डॉ.जीएमसी राव ने सेमिनार के मौके पर 4- बी मॉडल का कांसेप्ट प्रस्तुत किया। उन्होंने 4 बी मॉडल की बात कहते हुए जैव-डीजल, जैव-इथेनाल, जैव विद्युत व जैव उवर्रक के उत्पादन को बढ़ावा देने की बात कही। उन्होंने कहा कि हमें उत्पादों की नवीनता के साथ ही लागत मूल्य कम करने की रणनीति बनानी होगी।

संयुक्त गठबंधन कर लगाया जाए उद्योग

सेमिनार में चीनी उद्योग की आर्थिक स्थिति को मजबूती देने के क्रम में कई विशेषज्ञों ने संयुक्त गठबंधन कर उद्योग लगाने की अवधारणा प्रस्तुत की। उनका कहना था संयुक्त गठबंधन से व्यापक पूंजी के साथ अत्याधुनिक मिलों को स्थापित कर चलाना संभव हो सकेगा। इससे उत्पादन लागत को कम करने में मदद मिल सकती है।

डॉ.बक्शी राम व विनय कुमार का हुआ सम्मान

शुगर केन ब्रीडिंग संस्थान कोयंबटूर के निदेशक डॉ.बक्शीराम को सेमिनार के मौके पर गन्ने की सीओ 238 प्रजाति विकसित करने की उपलब्धि पर एनएसआई द्वारा सम्मानित भी किया गया। गन्ने की इस प्रजाति ने उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र में वर्ष 2015-16 में गन्ने के उत्पादन की दिशा में एक क्रांति ला दी है। राष्ट्रीय सहकारी चीनी मिल संघ (नई दिल्ली) के पूर्व एमडी विनय कुमार को भी चीनी उद्योग क्षेत्र में उनके बहुआयामी सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।

HINDUSTAN TIMES 10-07-2016

Sugar factories need bio-fuels for sustainable profitability

HT Correspondent
htcity.kanpur@hindustantimes.com

KANPUR: Arvind Chudasama, editor, international sugar journal, on Saturday stressed on the need for developing bio-fuels and bio-chemicals for sustainable profitability of sugar factories.

He was speaking at one-day international symposium on 'opportunities and challenges from emerging bioeconomy for the sugar sector' held at National Sugar Institute (NSI).

On the occassion, he presented 10 substitutes of petro-chemicals including acrylic acid, farnesene, isobutene, poly-ethylene which could be produced during sugar manufacturing process.

Dr. Jan Z Zang, a research fellow at Queensland University of Technology, Australia dwelt upon bio-fuels production using sugarcane industry by-products. He discussed the process of production of cellulosic ethanol and said its production could meet India's requirement.

Malcom Topfer from Sugar Knowledge International Ltd, London spoke about technologies available for producing refined sugar.

He discussed various models of sugar refineries keeping in view sugar quality required, Capex (capital expenditure), Opex (operational expenditure), water availability, environments and food safety issues and availability of equipment.

Director NSI Dr Narendra Mohan felicitating Bakshi Ram for developing sugarcane variety.

Michael Saska, former professor at Audobon Sugar Institute, University of Lousiana, USA, discussed the sucrose losses in cane storage and suggested the use of low colour cane varieties, low trash levels and monitoring of colour balance around clarifier for achieving good quality sugar upon processing.

Dr GSC Rao, managing director, Global Cane Sugar Pvt Ltd, presented a 4-B model for the sugar mills producing bio-diesel, bio-ethanol, bio-electricity and bio-manure and stressed upon product innovation, low cost price strategy, joint ventures and tie up with other industries.

Dr. Bakshi Ram, director, Sugarcane Breeding Research Institute, Coimbatore was felicitated by the NSI for developing Co 0238 sugarcane variety and Vinay Kumar ex- managing director, National Federation of Cooperative Sugar Factories, New Delhi was felicitated for his multi-dimensional contribution for the development and growth of Indian sugar and allied industry.

Earlier, welcoming the delegates Prof. Narendra Mohan, director NSI called upon for converting the 'single product sugar factories' into 'bio-refineries' producing sugar, power, ethanol, bio-water, bio-plastics, green chemicals and other value added products.

The symposium which was jointly organised by NSI and Global Cane Sugar Pvt. Ltd, was attended by large number of overseas and Indian delegates from Maharashtra, Karnataka, Uttar Pradesh, Punjab, Haryana, Tamil Nadu and Bihar.

Dr Seema Paroha conducted the proceedings while Dr Swain presented vote of thanks.

अमर उजाला My City 10-07-2016

चीनी क्षेत्र में जैव अर्थव्यवस्था में उभरते अवसर एवं चुनौतियां पर सिंपोजियम

'करन चार' यूपी के लिए बना वरदान

अमर उजाला ब्यूरो

कानपुर। गन्ने की प्रजाति सीओ जीरो 238 (करन चार) यूपी के लिए वरदान साबित हो रही है। उम्मीद है कि इस प्रजाति की बदौलत जल्द ही यूपी चीनी उत्पादन में महाराष्ट्र को पीछे छोड़ देगा। मौजूदा समय में यूपी चीनी उत्पादन में दूसरे स्थान पर है जबकि गन्ना पैदावार में पहले स्थान पर। यही नहीं इस प्रजाति ने चीनी मिलों और किसानों को मालामाल किया है। पिछले वर्ष 26 हजार करोड़ रुपये का कारोबार किया गया। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में शनिवार को चीनी क्षेत्र में जैव अर्थव्यवस्था में उभरते अवसर एवं चुनौतियां विषय पर आयोजित एक दिवसीय सिंपोजियम में यह जानकारी शुगरकेन ब्रीडिंग अनुसंधान संस्थान कोयंबटूर के निदेशक बक्शीराम ने दी।

इन्होंने बताया कि 2013 से 'करन चार' प्रजाति का इस्तेमाल यूपी के गन्ना किसान कर रहे हैं। तीन साल से लगातार खेती का रकबा बढ़ता जा रहा है। 2015-16 में कुल बुआई क्षेत्र के 20 फीसदी हिस्से में इस प्रजाति के बीजों की बुआई की गई। इसकी खासियत बढ़िया पैदावार है। इसके एक टन गन्ने से 111-13 किलो चीनी उत्पादित होती है।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में सम्मानित किए गए मैलकाम टॉफर, डॉ. बक्शी राम, ए छुदासामा के साथ संस्थान के निदेशक नरेन्द्र मोहन।

12 साल लगते हैं एक प्रजाति तैयार करने में

डा. बक्शीराम ने बताया कि गन्ना कि एक प्रजाति विकसित करने में 12 साल लगते हैं। छह साल तक संबंधित सेंटर पर उसके तमाम प्रशिक्षण होते हैं। इसके बाद एआईसीआरवी के 10 सेंटरों पर अगले छह साल तक विभिन्न टेस्ट होते हैं। इसके बाद नई प्रजाति के बीज किसानों को दिए जाते हैं। वहीं उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र, कर्नाटक के लिए 20 ऐसे बीज तैयार कर लिए गए हैं जो सूखा पड़ने पर भी बोए जा सकते हैं।

स्प्रे इंजीनियरिंग डिवाइस लिमिटेड के एमडी विवेक वर्मा ने बताया कि अब नई तकनीक से एक बार हीट से पैदा स्टीम को 15 बार तक प्रयोग कर सकते हैं। पहले इसे एक या दो बार इस्तेमाल कर सकते थे। दुबई स्थित विश्व के सबसे बड़े शुगर रिफाइनरी प्लांट अल खलीज रिफाइनरी में भी इसी तकनीक का प्रयोग होता है। इस तकनीक के प्रयोग से चीनी मिलों में बिजली की खपत को 20-30 फीसदी तक कम होने का साथ प्रदूषण भी कम होता है।

कार्यक्रम में गन्ने की कई प्रजातियों के जनक बक्शीराम को प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन, शुगर नॉलेज टेक्नोलॉजी इंटरनेशनल लिमिटेड यूके के मैल्कम टॉफर, इंटरनेशनल शुगर जरनल यूके के एडिटर ए छुदासामा, क्वीन्सलैंड यूनिवर्सिटी आफ टेक्नोलॉजी आस्ट्रेलिया के रिसर्च फेला डा. जान झांग, ऑडोबॉन शुगर इंस्टीट्यूट, यूनिवर्सिटी आफ लुसियाना, अमेरिका के पूर्व प्रोफेसर माइक ल सास्का, ग्लोबल केन शुगर प्राइवेट लिमिटेड के जीएससी राव ने भी विचार रखे। यहां पर डा. संतोष कुमार, डा. सीमा परौहा, डी स्वेन आदि मौजूद रहे।

हिन्दुस्तान 10-07-2016

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में चीनी क्षेत्र में जैव अर्थव्यवस्था में अवसर व चुनौतियों पर आयोजित हुई अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

गन्ना उत्पादन में यूपी होगा नंबर वन

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

जल्द ही यूपी गन्ना उत्पादन में महाराष्ट्र को पछाड़कर नंबर वन होने जा रहा है। सूखे से महाराष्ट्र की खराब हो चुकी है स्थिति अगर ऐसी ही रही तो अगले वर्ष यूपी नंबर वन हो जाएगा। गन्ना प्रजनन संस्थान की वैराइटी सीओ 0238 से यूपी गन्ना उत्पादन में तेजी आई है। इसके उपयोग से रिकवरी 9.18 फीसदी से बढ़कर 10.61 फीसदी हो गई है। यह बातें राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में शुगरकेन ब्रीडिंग संस्थान कोयम्बटूर के निदेशक डा.बक्शी राम ने शनिवार को कही।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में चीनी क्षेत्र में जैव-अर्थव्यवस्था में उभरते अवसर और चुनौतियों विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। गन्ने में अब तक की सर्वश्रेष्ठ प्रजाति विकसित करने पर निदेशक डॉ. बक्शी राम को निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने सम्मानित किया। निदेशक डा.बक्शीराम ने कहा कि यूपी लगातार ग्रो कर रहा है। 2012-13 में सीओ 0238 प्रजाति विकसित करने के बाद से 72 हजार से एक लाख 76 हजार और फिर चार लाख दो हजार एरिया गन्ना बुआई का बढ़ा है। नई प्रजाति से चीनी मिलों के साथ ही किसानों को कुल 26 हजार करोड़ रुपए का फायदा हुआ है। निदेशक प्रो.नरेंद्र मोहन ने कहा कि चीनी उत्पादन करने वाली मिलों को चीनी के साथ ही बिजली, बायोवाट, एथेनॉल, हरित ति उत्पादन करने वाली जैव रिफाइनरीज में बदलना समय की मांग है।

शनिवार को एनएसआई में डॉ.बक्शी राम को सम्मानित किया गया।

कम नहीं होंगे दाम

डा. बक्शी राम ने बताया फिलहाल चीनी के दाम कम नहीं होने वाले हैं। इस बार भी 252 लाख टन पैदावार होने की उम्मीद है, जबकि डिमांड 265 लाख टन की है। अगर स्थिति ठीक रही तो अगले वर्ष 2017 में चीनी के दाम कम हो सकते हैं।

नई प्रजाति बोई जा रही

वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश में चार लाख 12 हजार हेक्टेयर में नई प्रजाति का गन्ना बोया जा रहा है। यूपी में वैराइटी का बदलाव देर से होने के चलते उत्पादन कम होता था। अब ऐसा नहीं है, इसीलिए उत्पादन बढ़ रहा है।

सूखे से निपटने को 20 वैराइटी तैयार

डा. बक्शी ने बताया कि सूखे से निपटने के लिए संस्थान ने 20 वैराइटी विकसित की हैं। इनका ट्रायल महाराष्ट्र की छह फैक्ट्री में होने जा रहा है। इन वैराइटी के बीज जनवरी में बाजार में आ जाएंगे। इससे सूखे में भी गन्ने का उत्पादन होगा। इससे देश के कई हिस्सों को राहत मिलेगी। एक वैराइटी को विकसित करने में करीब 12 वर्ष का समय लगता है। इसमें छह वर्ष स्टेशन और छह वर्ष बाहर ट्रायल होता है।

बगास से पावर, सीएनजी व स्टीम बनाने की तैयारी

स्प्रे इंजीनियरिंग डिवाइस लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर विवेक वर्मा ने बताया कि आने वाले समय में बगास से पावर, सीएनजी, स्टीम और केमिकल बनाना होगा। अब पेट्रोलियम उत्पाद को बगास से बनाकर उन पर निर्भरता कम करनी होगी। दुबई के अलखलीज रिफाइनरी में दुनिया का पहला प्लेट इवोपरेटर एंड मैकेनिकल वेपर रीकम्प्रेशन प्लांट लगाने वाले विवेक वर्मा ने बताया कि इससे स्टीम का उपयोग पांच बार की बजाए 15 बार हो सकता है। वहीं स्टीम का उपयोग 10 से 15 की बजाए 1 से 2 डिग्री डेल्टाटी तापमान पर करते हैं।

inext 10-07-2016

पूरे देश में धूम मचाएगा करनाल का गन्ना

करनाल के बीज से यूपी मालामाल

» बीज के यूज से गन्ना उत्पादन में यूपी नंबर एक पायदान पर पहुंचा, करनाल सेंटर में 7 साल पहले वैरायटी विकसित हुई थी

kanpur@inext.co.in

KANPUR (9 July): करनाल गन्ना बीज डेवलपमेंट सेंटर में 7 साल पहले डेवलप की गई सीओ 238 वैरायटी अब यूपी के किसानों के लिए वरदान साबित हो रही है. ये बीज एक हेक्टेयर में करीब 100 टन गन्ने का उत्पादन कर किसानों को मालामाल कर रहा है. जबकि अन्य प्रजाति के गन्ने का उत्पादन 50 से 60 टन प्रति हेक्टेयर होता है. इस बीज से 295 टन प्रति हेक्टेयर का उत्पादन कर रिकॉर्ड बनाने वाले सीतापुर के एक किसान को यूपी गवर्नमेंट ने सम्मानित किया है. इसके चलते गन्ना उत्पादन में यूपी पहले नंबर पहुंच गया है. यह जानकारी शुगर केन ब्रीडिंग रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट सेंटर कोयंबटूर के डायरेक्टर डॉ. बख्शी राम ने दी.

साल दर साल उत्पादन बढ़ रहा

डॉ. बख्शी राम नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में आयोजित इंटरनेशनल सिंपोजियम में शिरकत करने शहर प्रवास पर आए थे. उन्होंने बताया कि करनाल रीजनल शुगर केन ब्रीडिंग सेंटर में उन्होंने 7 एग्री साइंटिस्ट के साथ मिलकर इयर 2009 में सीओ 238 शुगर केन वैरायटी डेवलप की थी. हालांकि यूपी में किसानों को यह वैरायटी इयर 2012 में मिली थी. यूपी गवर्नमेंट ने इस वैरायटी को रिलीज करने में उस वक्त हेल्प नहीं की थी. इयर 2012 से लगातार यूपी के शुगर केन किसान अच्छा उत्पादन कर रहे हैं. करीब 4 लाख हेक्टेयर से ज्यादा लैंड में किसान खेती कर रहे हैं. किसानों को 14000 और मिल मालिकों को 12000 करोड़ रुपए मिले हैं.

सूखा प्रभावित एरिया के लिए बीज उपलब्ध

डॉ. बख्शी को मोमेंटो देते एनएसआई डायरेक्टर.

डॉ. बख्शी राम ने बताया कि महाराष्ट्र के सूखा प्रभावित एरिया में गन्ना किसानों के लिए करीब 20 सूखा प्रभावित बीज की प्रजातियां उपलब्ध कराई जाएंगी. इन प्रजातियों से काफी ज यादा उत्पादन होने की संभावना है. महाराष्ट्र की 6 शुगर इंडस्ट्री को जनवरी में बीज दिए जाएंगे. इस एरिया का सर्वे भी पूरा किया जा चुका है.

यूपी में ऐसे बढ़ा साल दर साल गन्ना उत्पादन

2012-13	61
2013-14	62
2014-15	65
2015-16	66.5

एनर्जी प्रोडक्शन पर फोकस करें शुगर इंडस्ट्री

» एनएसआई में शुरू हुए इंटरनेशनल सिंपोजियम में जुटे दुनिया भर के एक्सपर्ट

» कहा, चीनी बनाने से आगे निकल जैव रिफाइनरीज में बदलना होगा

kanpur@inext.co.in

KANPUR (9 July): शुगर इंडस्ट्री को एनर्जी खपत और कम करनी होगी. अभी भी काफी शुगर मिलें 50 परसेंट ऊर्जा खपत कर रही हैं. टेक्नोलॉजी की मदद से यह खपत 30 परसेंट तक लाई जा सकती है. शुगर मिल 200 किलोवाट तक बिजली का प्रोडक्शन कर सकती हैं लेकिन ज्यादातर मिलें 100 किलोवाट तक ही प्रोडक्शन कर पाती हैं. टेक्नोलॉजी की मदद से यह सब किया जा सकता है. यह जानकारी एनएसआई में आयोजित इंटरनेशनल सिंपोजियम में टेकी एक्सपर्ट विवेक वर्मा ने दी. सिंपोजियम का इनॉग्रेशन दीप जलाकर किया.

चीनी बनाने तक सीमित न रहें

डायरेक्टर प्रो. नरेन्द्र मोहन ने बताया कि शुगर इंडस्ट्री का काम अब चीनी बनाने तक ही सीमित नहीं है. पॉवर, एथनॉल, बॉयोवाटर, हरित रसायन को बनाने के लिए इंडस्ट्री को जैव रिफाइनरीज में चेंज करना होगा. चीनी मिल को बहुउत्पादक इकाई में डेवलप करना होगा. इससे मिल को फायदा ज्यादा होगा. यूएसए से आए माइकल सास्का ने भी शुगर केन से संबंधित अहम जानकारियां दीं.

बायो उर्वरक बनाने पर ध्यान दें

यूके से आए मैलकम टाफर ने लेटेस्ट चीनी रिफाइनरी के बारे में विस्तार से जानकारी दी. डॉ. बख्शी राम ने एनर्जी केन ब्रीडिंग के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि, एनर्जी को टेक्नोलॉजी की मदद से बढ़ाया जा सकता है. इस मौके पर डॉ. जीएससी राव ने कहा कि शुगर मिलें बायो एनर्जी और बायो उर्वरक बनाने की दिशा में काम करें. इस मौके पर डॉ. आशुतोष बाजपेई, डॉ सीमा परोहा, डॉ. संतोष कुमार, डॉ. डी स्वेन मौजूद रहे.

दैनिक जागरण 10-07-2016

सूखे में भी लहलहाएगी गन्ने की फसल

पत्रिका का विमोचन करते निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन, साथ में वक्ता मैलकाम टाफर, माइकल सास्का, अरविंद चुदास्मा, डा. जान झांग, डा. बक्शी राम व डा. जीएससी राव।

कानपुर, जागरण संवाददाता : आने वाले समय में उन क्षेत्रों में भी गन्ने की बंपर पैदावार होगी जहां पानी की कमी है। गन्ना प्रजनन संस्थान ने गन्ने की ऐसी 20 प्रजातियां विकसित की हैं। यह जानकारी राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) में शनिवार को अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने पहुंचे शुगरकेन ब्रीडिंग अनुसंधान संस्थान कोयंबटूर (तमिलनाडु) के प्रबंध निदेशक डा. जीएससी राव ने दी। इन प्रजातियों के अंतिम परीक्षण के लिए महाराष्ट्र की छह फैक्ट्रियों को चुना गया है। परीक्षण के बाद यह प्रजातियां पूरे देश में एक साथ लांच की जाएंगी।

- उत्तर प्रदेश में गन्ने की पैदावार बढ़कर 66 .5 टन पहुंची
- सीओ-0238 प्रजाति से किसानों को मिल रहा भरपूर लाभ

एनएसआई व ग्लोबल केन शुगर नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी के दौरान डा. राव ने बताया कि प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र के किसानों को इन नई प्रजातियों का भरपूर लाभ मिलेगा। इससे पहले विकसित की गई सीओ-0238 प्रजाति ने भी प्रदेश में गन्ने की जबरदस्त पैदावार बढ़ाई है। इस प्रजाति ने बीते चार वर्षों में गन्ने का उत्पादन साढ़े पांच टन बढ़ा दिया है। इस प्रजाति के जरिए 2012-13 में गन्ने का उत्पादन 61 टन हुआ करता था जो 2013-14 में 62 टन, 2014-15 में 65 व 2015-16 में उत्पादन बढ़कर 66.5 टन पहुंच गया। डा. राव ने बताया कि सीतापुर के एक किसान ने इस प्रजाति से 295 टन प्रति हेक्टेयर गन्ने की पैदावार कर रिकार्ड कायम किया है। प्रदेश सरकार की ओर से इस किसान को सम्मानित भी किया गया था। वर्तमान में प्रदेश में 20 लाख 50 हजार हेक्टेयर में गन्ने की फसल बोई जाती है जिसमें इस प्रजाति की बुवाई का क्षेत्रफल चार लाख हेक्टेयर है।

संगोष्ठी में शुगर नालेज इंटरनेशनल लिमिटेड यूनाइटेड किंगडम से मैलकाम टाफर, आडोबान शुगर इंस्टीट्यूट लुसियाना विश्वविद्यालय अमेरिका के सेवानिवृत्त प्रो. माइकल सास्का, इंटरनेशनल शुगर जनरल लंदन के संपादक ए चूडास्मा व क्वींसलैंड यूनिवर्सिटी आफ टेक्नोलाजी आस्ट्रेलिया के रिसर्च फेलो डा. जान झांग व एनएसआई निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन थे।

चीनी उत्पादन के साथ अब हो रही ऊर्जा की बचत भी : 'चीनी क्षेत्र में जैव अर्थव्यवस्था में उभरते अवसर एवं चुनौतियां' विषय पर संगोष्ठी में स्प्रे इंजीनियरिंग डिवाइसेस लिमिटेड के एमडी विवेक वर्मा ने बताया कि चीनी उत्पादन संग ऊर्जा की बचत भी हो रही है। पहले 50 फीसद तक भाप की खपत होती थी जो मल्टीपल इफेक्ट वेपोरेटर से घटकर 35 फीसद पर आ गई है। दुबई के अल खरीफ में सबसे बड़ा मल्टीपल इफेक्ट वेपोरेटर लगाया गया है जो सात हजार टन चीनी रिफाइनिंग करता है। एक ही स्टीम का उपयोग 15 बार तक हो सकता है जबकि पहले एक बार संभव था।

SUNDAY TIMES 10-07-2016

New cane variety to boost sugar industry

TIMES NEWS NETWORK

Kanpur: Uttar Pradesh has emerged as the leader in sugarcane production this year, after Maharashtra failed to retain the top slot. This has been possible partially by the use of a newly released variety of sugarcane, Co0238, that has been developed by a team of scientists led by Bakshi Ram, director of Sugarcane Breeding Research Institute in Coimbatore . This variety is increasingly gaining popularity in the state.

EXPERTS SPEAK

Ram, who had come to premier National Sugar Institute (NSI) in the city to take part in an international symposium, said "Though Co0238 was developed for sub-tropical regions of Uttar Pradesh, Haryana and Punjab, it has shown results better than the older variety – Co86032 – which is prominent in tropical regions of Karnataka and Mahrashtra." He added that with the introduction of the new variety in 2012-13, the average yield of sugarcane in UP increased from 60 tonnes per hectare to 66.5 tonnes per hectare in 2015-16.

"In UP there is a persisting problem of low sugarcane productivity as indicated by lower yields as well as lower sugar content in sugarcane. Here, this variety can work wonders," he claimed.

Besides Ram, a number of experts in sugar industry from the US, UK and Australia also took part in the symposium 'Opportunities and challenges from the emerging bio-economy for the sugar sector', held here on Saturday. They discussed means to be adopted for sustainability of the sugar industry across the globe with focus on the Indian sugar producing industry. The experts stated that there is a need to switch over to newer technologies for producing sugar.